IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, April 2022
Impact Factor: 6.252

कोल जनजातियों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का एक अध्ययन (सीधी नगर के विशेष सन्दर्भ में)

Dr. Madhulika Shrivastava[1] and Preeti Satnami[2]
Professor, Department of Sociology[1]
Research Scholar, Department of Sociology[2]
Government Thakur Ranmat Singh College, Rewa, Madhya Pradesh, India

Abstract: आदिवासी हमारी ही तरह प्रकृति के अनुपम उपहार है। वह हमारे ही समाज के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष अंग है। वह तथाकथित सभ्य कहें जाने वाली जातियों से अधिक सभ्य है। आदिवासी समाज में देश–प्रेम, जाति प्रेम और संस्कृति प्रेम कूट–कूट कर भरा होता है। इतिहास साक्षी है कि अपनी संस्कृति की रक्षा के लिये और अपनी स्वाधीनता के लिये इस समाज ने अनेक युद्ध किये हैं। छल, कपट से दूर सीधे–सरल स्वभाव से ओत–प्रोत एवं आपस में भाई–चारे की भावना तथा अपनेपन की भावना से ओत–प्रोत होते है। आदिवासी समाज आज भी प्रकृति के उर्पाजनों यथा–जल, जंगल, जमीन की अस्मिता के लिये प्रण–प्राण से न्यौछावर है। सांस्कृतिक सभ्यता उनकी अनमोल धरोहर है और उनकी भाषा में उनका जीवन बसता है, इस प्रकार आदिवासी कहने में एक ऐसे परिवार या समूह का बोध होता है, जिसकी स्वयं की भाषा, संस्कृति एवं एक सुनिश्चित भू–भाग होता है, जिसमें वे परम्परागत विधि–विधानों से परिपूर्ण स्वतंत्र सुरक्षात्मक संगठन के जरिये अपने समाज का संचालन करने में समर्थ होते हैं।

Keywords: आदिवासी, समाज, संस्कृति, सभ्यता, इतिहास, आर्थिक स्थिति आदि।

प्रस्तावना :–

समाज में परिवर्तन आवश्यक है, वैसे परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। समाज भी प्रकृति का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसलिये समाज में भी परिवर्तन की प्रक्रिया निरन्तर गतिशील है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि मानव समाज सैकड़ों और हजारों वर्षों की विकास प्रक्रिया से गुजरता हुआ वर्तमान अवस्था तक पहुँच पाया है। मानव अपनी सभ्यता और संस्कृति का निरन्तर प्रगति करता जा रहा है, इस विकास की प्रक्रिया में कुछ क्षेत्र आगे बढ़ गये कुछ पीछे रह गये हैं। प्राचीनकाल में मानव जंगलों और पहाड़ों में जीवन निर्वाह करता था। आखेट अवस्था के बाद उसने पशुपालन अवस्था में प्रवेश किया, फिर भी उसका भटकना समाप्त नहीं हुआ। कृषि के अविष्कार के साथ ही वह एक स्थान पर घर या झोपड़ी बनाकर रहने लगा फिर भी मनुष्यों का एक समूह जंगलों और पहाड़ों में भटकता रहा और अपने सदस्यों की संख्या में वृद्धि के साथ ही सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक जीवन में विकास करता गया, आज यही झुण्ड अधिक विकसित हो गया तो इसे आदिवासी कहा गया।

मानव एक सामाजिक प्राणी है। समाज मानव का एक अजायब घर है, जिसमें सभी प्रकार के लोग निवास करते हैं। मनुष्य का यह जीवन अनेक आवश्यकताओं अनेक विवधताओं से परिपूर्ण है, उसे अपने जन्म पालन–पोषण, सुरक्षा–शिक्षा, संस्कृति, आधुनिकता, परिवर्तनशीलता और अन्य सभी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये दूसरों के सहयोग व सहायता पर निर्भर रहना पड़ता है। अनुसूचित जनजाति भी हमारे समाज का महत्वपूर्ण अंग है। भारत गांवों का देश है, जिसमें 68 प्रतिशत आबादी निवास करती है। भारत में ग्रामीण जनसंख्या की अधिकता के कई कारण है जैसे–कृषि पर निर्भरता, अशिक्षा, अज्ञानता, गतिशीलता का अभाव नगरों में मकानों की कमी एवं मंहगाई, यातायात के साधनों का अभाव आदि।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, April 2022
Impact Factor: 6.252

महाद्वीपों के दुर्गम क्षेत्रों में आज भी ऐसे अनेक मानव समूह है, जो हजारों वर्षो से रोक विश्व की सभ्यता से दूर अपनी सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना की पहचान बनाये हुए हैं। ये मानव समूह, बीहड़ तनों मरूस्थलों ऊँचे पर्वतों और अनुर्वर पठारों के उन अंचलों में रहते हैं, जिन्हें आधुनिक समाज की अर्थदृष्टि अनुत्पादक मानती है। इन मानव समूहों का अपना अलिखित इतिहास था, जिसका केवल अन्तिम पृष्ठ ही शेष रह गया है न जाने किस समय यह समूह छोटे–छोटे ऐसे कबीलों में बंट गया, जिनमें एक–दूसरे की पहचान और रिश्तों की डोरी या तो टूट चुकी है या उलझ चुकी है। हिन्दी में ऐसे मानव समूहों के लिए 'आदिवासी' 'आदिमवासी' 'कबीली आबादी' और 'जनजाति' जैसे संबोधन है। ये सभी शब्द अंग्रेजी भाषा के 'नेटिव' 'एवोरीजनल' और ट्राइब (या ट्राइबल्स) शब्दों के पर्याय है। आज के सभ्य समाज में भी दुनिया में अनेक ऐसे समाज है, जहां के निवासी आधुनिक दृष्टिकोण से अधिक सभ्य नहीं है और संस्कृति भी अधिक विकसित नहीं हो पाई है। अनुसूचित जनजातियाँ आज भी आदिम संस्कृति का प्रतिनिधित्व कर रही हैं। और उसी रूप में विभिन्न देशों में जंगलों, पहाड़ों व पठारी क्षेत्रों में निवास कर रहे हैं। इनके जीवन के प्रत्येक पक्ष में मानव के आदिम रूप की झलक देखने को मिलती है। ये मानव तथा संस्कृति के आदि रूप है। कोई इन्हें जंगली तो किसी ने इन्हें असभ्य कहा, वास्तव में आदिवासियों को जिसने जैसे देखा उसी नाम से पुकारा। आदिवासियों को मानवशास्त्रियों व समाजशास्त्रियों ने अलग–अलग नाम से पुकारा। रिजले, लेके, ग्रिगर्सन, सोर्बट, टेलेण्ट्स, ऐंजानिक, मार्टिन, ए.वी. ठक्कर आदि ने इन्हें आदिवासी के नाम से पुकारा वहीं हट्टन की नजर में ये 'आदिम जातियों' के रूप में जाने गये। सर बेन्स ने इन्हें 'पर्वतीय जनजातियों' का सम्बोधन दिया। टेलेण्ट्स, सेजनिक मार्टिन ने आदिवासियों को 'सर्वधीववादी' के नाम से भी पुकारा।

प्रख्यात समाजशास्त्री वोरियर एल्बिन ने कहा था– ''आदिवासी भारत की वास्तविक स्वदेशी उपज है, जिनकी उपस्थित में प्रत्येक व्यक्ति विदेशी है। ये वे प्राचीन लोग है, जिनके भौतिक आधार और दावे हजारों वर्ष पुराने है, वे सबसे पहले यहाँ आये ''।

वास्तव में भारतीय समाज की नींव के पत्थर आदिवासी ही है, समाज की सबसे असली विरासत भारतीय आदिवासी ही है। मध्यप्रदेश में बघेलखण्ड, शहडोल, जबलपुर, रायपुर और मंडला में कोलो का निवास है। कोल मध्यप्रदेश की गोड़ों के बाद दूसरी सबसे बड़ी जनजाति में गिनी जाती है। कोलो की घनी आबादी रीवा, सीधी तथा सतना में है। मध्यप्रदेश के अलावा कोलो का अपना मूल निवास रीवा जिले के फरेन्दा और कुराली गांव को मानते हैं। यहीं से कोल सभी जगह फैले हैं। बघेलखण्ड को विंध्य प्रदेश भी कहते हैं। बघेलखण्ड मध्यप्रदेश के उत्तर पूर्वी भूगोल का अंग है। विंध्य प्रदेश पर चेपि, वल्य और कल्चुरी शासकों ने राज किया है। डॉ. महेशचंद्र शांडिल्य ने कोल मोनोग्राफ में लिखा है, बघेलखण्ड के संबंध में ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर कहा जाता है कि तेरहवीं शताब्दी में व्याघ्रदेव ने बांधवगढ़ को अपनी राजधानी बनाकर इस भू–खण्ड में अपनी प्रभुता स्थापित की इनके पुत्र कर्णदेव ने प्रभुसत्ता का विस्तार किया। इसी वंश के बाइसवें राजा विक्रमादित्य ने 1597 में अपनी राजधानी बांधवगढ़ से बदलकर रीवा बनायी। बघेलों का अधिपत्य होने के कारण ही इस भू–खण्ड का नाम बघेलखण्ड हुआ। राजा कर्णदेव को कोल भारिया, भूमिया आज भी अपना वंशज मानते हैं। कोल भारत की प्राचीनतम जनजातियों में से एक है। नृतत्वशास्त्र की दृष्टि से भी कोल, कोलारियन या मुण्डा समूह की जाति प्रजातियों को आदिम माना गया है। ऋग्देव से लगातार अनेक पुराणों और संस्कृत ग्रंथों में कोल–किरात, भील आदि जनजातियों का उल्लेख मिलता है। ऋग्देव में कोल जनजाति कोल्हाटिय कहा गया है जो बाद में कोलहटिया से कोल्हा हुआ हो और अन्त में कोल्ह रह गया।

कोल जनजाति भारत की आदिम जनजातियों में गिनी जाती है। व्यावसायिक दृष्टि से इस जाति के अधिकांश लोग उद्योगों में श्रमिक के रूप में कार्य करते है। कोल जनजाति में पंचायत का अत्यंत महत्व होता है, जिसके निर्णय को सभी लोग मानते हैं। महिलाओं में शिक्षा के प्रति उदासीनता, शिक्षा का स्तर, आर्थिक जीवन,

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, April 2022
Impact Factor: 6.252

संस्कार, वेश–भूषा रीति–रिवाज आदि तथ्यों के कारण उनके सामाजिक जीवन को प्रभावित किया है, इन तथ्यों में क्या परिवर्तन आया यह शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य है। निम्नलिखित है –

1. कोल जनजातीय की आर्थिक जीवन में परिवर्तन का अध्ययन करना।
2. कोल जनजातीय के कार्य करने की दशाओं के संबंध में नवीन जानकारी प्राप्त करना।
3. कोल जनजातीय के शैक्षणिक एवं धार्मिक जीवन स्तर में क्या परिवर्तन आया, इसकी भी जानकारी प्राप्त करना।

शोध प्रविधिः

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध विषय को ध्यान में रखते हुए निम्न पद्वतियों का उपयोग किया गया है –

निदर्शन पद्धतिः

अध्ययन को स्वरूप देने के लिए उद्देश्यपरक निर्देशन के अन्तर्गत सीधी शहर का चयन किया गया। सीधी शहर में रह रहे कोल जनजाति का चयन निदर्शन के माध्यम से किया गया है।

शोध उपकरणः

प्रश्नावली

अध्ययन को स्वरूप प्रदान करने के लिए सीधी शहर क्षेत्रों में निवास कर रह रहें कोल जनजाति से प्रश्नावली के माध्यम से उनकी राय और विचारों को जानने के प्रयास किया गया है। तथ्य संकलन के लिए प्रश्नावली का उपयोग किया गया है। प्रश्नावली के अंतिम प्रश्न के रूप में खुला प्रश्न दिया गया जिसके माध्यम से प्रतिभागियों के विचारों को भी शोध में शामिल किया गया है।

अनुसूची

भाषाई विविधता होने के कारण, कुछ प्रतिभागियों को प्रश्नावली समझने में समस्या होने के कारण, उनसे राय और विचार जानने के लिए प्रश्नावली का उपयोग यहाँ अनुसूची के रूप में भी किया गया है।

तथ्य विश्लेषण एवं आंकडों का प्रस्तुतिकरण

प्रस्तुत शोध में अध्ययन के माध्यम से यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है। कोल जनजाति की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति की लोकप्रियता और कार्य पद्धति को केन्द्र में रखकर यह शोध कार्य किया गया है।

तथ्यों और आंकड़ों को प्रश्नावली, अनूसूची के माध्यम से एकत्रित कर उनका विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध सीधी शहर में रहने वाले कोल जनजाति पर विशेष रूप से केन्द्रित है। अध्ययन में जिनमे विषय से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई है। तथ्य संकलन हेतु पचास से अधिक प्रश्नावली, अनुसूची को भरवाया गया है। लेकिन तथ्य विश्लेषण में पचास प्रतिभागियों के मतो को शामिल किया गया है। तथ्य संकलन का कार्य अप्रैल 2022 में किया गया है। साक्षात्कार अनुसूची में कुल 03 प्रश्नो को शामिल किया गया है। साक्षात्कार अनुसूची में बहुविकल्पीय प्रश्नों के माध्यम से प्राप्त तथ्यों को अध्ययन हेतु केन्द्र में रखा गया है। साक्षात्कार अनुसूची में विकल्प के रूप मे हॉ, नही और पता नही को तथ्य संकलन हेतु आधार बनाया गया है। जो इस प्रकार है

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, April 2022
Impact Factor: 6.252

तालिका क्रमांक 01:क्या कोल जनजाति शिक्षा के प्रति जागरूक है।

क्रमांक	न्यादर्श का चयन	संख्या	प्रतिशत
01	हॉ	20	40
02	नही	25	50
03	पता नही	05	10
योग –		**50**	**100**

तालिका क्रमांक 01 से स्पष्ट होता है कि कोल जनजाति शिक्षा के प्रति जागरूक है में कुल 50 उत्तरदाताओं में से 20 (40 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि जागरूक है जबकि 25 (50 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा जागरूक नही है तथा 05 (10 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा ज्ञात नही है।

तालिका क्रमांक 02: कोल समुदाय के प्रति समाज का दृष्टिकोण कैसा है।

क्रमांक	न्यादर्श का चयन	संख्या	प्रतिशत
01	अच्छा	22	44
02	सहयोगात्मक	15	30
03	उपेक्षित	13	26
योग –		**50**	**100**

तालिका क्रमांक 03 से स्पष्ट होता है कि कोल समुदाय के प्रति समाज का दृष्टिकोण कैसा है में कुल 50 उत्तरदाताओं में से 22 (44 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि समाज का दृष्टिकोण अच्छा है जबकि 20 (40 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि समाज का दृष्टिकोण अच्छा नही है तथा 05 (10 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा ज्ञात नही है।

तालिका क्रमांक 03: क्या कोल जनजातीय के कार्य करने की दशाओं के संबंध में नवीन जानकारी है।

क्रमांक	न्यादर्श का चयन	संख्या	प्रतिशत
01	हॉ	24	48
02	नही	22	44
03	पता नही	04	08
योग –		**50**	**100**

तालिका क्रमांक 03 से स्पष्ट होता है कि कोल जनजातीय के कार्य करने की दशाओं के संबंध में नवीन जानकारी है में कुल 50 उत्तरदाताओं में से 24 (48 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि कार्य करने की दशाओं के संबंध में नवीन जानकारी है जबकि 22 (44 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि कार्य करने की दशाओं के संबंध में नवीन जानकारी नही है तथा 04 (08 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि इसके बारे में जानकारी नही है।

शोध निष्कर्ष:

कोल जनजाति शिक्षा के प्रति जागरूक है में कुल 50 उत्तरदाताओं में से 25 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि जागरूकता में अभी कमी है। तथा कोल समुदाय के प्रति समाज का दृष्टिकोण कैसा है में कुल 50 उत्तरदाताओं में से 22 (44 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि समाज का दृष्टिकोण अच्छा है। जबकि कोल जनजातीय के कार्य करने की दशाओं के संबंध में नवीन जानकारी है में कुल 50 उत्तरदाताओं में से 48 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि कार्य करने की दशाओं के संबंध में नवीन जानकारी है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, April 2022
Impact Factor: 6.252

संदर्भ–ग्रन्थ सूची:

[1]. डॉ. तिवारी शिव कुमार –(1984) मध्यप्रदेश के आदिवासी।
[2]. डॉ. ए.पी. सिंह –(1988) म.प्र. की जनजातियों पर विकास योजनाओं का प्रभाव ।
[3]. डेविस किंग्सले –(1973) 'मानव समाज' किताब महल इलाहाबाद।
[4]. ग्रीन ए. डब्ल्यू.– 'सोसियोलॉजी' ।
[5]. वेनवर्ग और शेबेल उद्घृत डॉ. वात्सायन (1971) ''सामाजिक संरचना प्रौद्योगिकी केदारनाथ, रामनाथ, मेरठ
[6]. आनन्द सी.एल. मार्डनाइजेशन एण्ड ट्रेडीशन इन नागर दबे पी.आर., पी.एन. एण्ड अरोरा कमला, द टीचर एण्ड एजुकेशन इन ऐमैजिन इण्डियन सोसायटी, पृ.क्र. 61
[7]. मैकाइवर, आर.एम. एण्ड पेज–(1953) सी.एच. सोसायटी दि मैकमिलन क.लि. लन्दन।
[8]. जेन्सन–एम.डी. टून्टोडक्सन टू सोसियोलॉजी एण्ड सोसल प्रवलम्बस।
[9]. गिन्सवर्ग मोरिस –(1958) सोशल जोन ब्रिटिस जनरल ऑफ सोसियोलॉजी
[10]. डॉ. मजुमदार एवं मदन –(1761) सामाजिक समाजशास्त्र।
[11]. डॉ. तिवारी शिव कुमार –(1997) मध्यप्रदेश की जनजातियाँ ग्रन्थ अकादमी।